आपने लिखा

आम का न होना तो बड़ा अखरा, लेकिन ...

शैक्षिक संदर्भ अंक 46 के संदर्भ में मैं कुछ कहना चाहता हूं। लेख 'कहां गए वो आम' में आपको एन.सी.इ.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक में भारतीय संस्कृति के फलों का न होना तो बड़ा अखरा, लेकिन स्वयं शिक्षक द्वारा अंडों का गुणगान उल्लेखनीय लगा। (देखिए लेख 'कक्षा में बच्चों से बातचीत', पृष्ठ क्रमांक 10)

आखिर शाकाहारी संस्कृति; विशेषकर उत्तर भारत के हिन्दी भाषी विद्यालयों में से कितने विद्यालयों के सभी बच्चे अंडे खाते हैं, कि आपने इतनी सहजता से छाप दिया – "तुम लोगों ने अंडा खाया होगा लेकिन हमें तो कभी नहीं खिलाया ...."

मुझे आपके इस दृष्टिकोण से दुख, पीड़ा और क्षोभ पहुंचा है लेकिन मेरे लिए संतोष की बात है कि अंक 47 मेरा अंतिम अंक है। आप मेरे पत्र का उत्तर देंगे या इसे पत्रिका में प्रकाशित कर स्पष्टीकरण देंगे इसकी न मुझे अपेक्षा है, ना आशा।

अजित जैन 'जलज'
ककरवाहा, टीकमगढ़, म.प्र.

अंक 45 पढ़ा। यह अंक भी पूर्ववर्ती अंकों की तरह उपयोगी लगा। दो मुंहा सांप के बारे में रोचक जानकारी मिली। हालांकि मैं अभी तक दो मुंहा सांपों के इस तथ्य से अपरिचित था कि इनमें एक मुंह ही होता है।

विज्ञान की किताबों में दी गई जानकारियां व्यवहारिक ज्ञान से काफी हटकर होती हैं, जबकि ज़रूरत इस बात की है कि विज्ञान को जितना व्यवहारिक बनाया जाए उतना ही शिक्षक और विद्यार्थियों को लाभ होगा। संदर्भ ने इसकी भरपाई की भरपूर कोशिश की है। फिर भी अभी बहुत से बुनियादी बातें छूट जाती हैं जिन्हें संदर्भ में समाहित करना चाहिए। जैसेः घरों में प्रयोग होने वाले यंत्रों और रासायनिक पदार्थों से जुड़े तथ्यों और सिद्धांतों को सहज तरीके से प्रस्तुत कर इस कमी को पूरा किया जा सकता है। इस तरह की जानकारियों को समाहित करने से यह पत्रिका विज्ञान विषय छोड़ चुके विद्यार्थियों के लिए रामबाण सिद्ध होगी और सभी के लिए अत्यंत ज़रूरी पत्रिका बन सकेगी।

शिवचंद प्रजापति
देवरिया, उत्तर प्रदेश